✺ 23 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] सबसे बड़ा अवगुण है विकार का, जिसको ही बैड कैरेक्टर कहते हैं। बाप कहते हैं तुम विशश बन गये हो। अब वाइसलेस बनने की तुमको युक्ति बताते हैं। इसमें इस विकारों को, अवगुणों को छोड़ देना है। कभी भी विशश नहीं बनना है। इस जन्म में सुधारेंगे तो वह सुधार 21 जन्मों तक चलना है। सबसे जरूरी बात है वाइसलेस बनना।

2] बाप ने कहा है अगर पतित बने तो सौ गुणा दण्ड भी खाना पड़ेगा और फिर पद भी भ्रष्ट हो जायेगा क्योंकि निंदा कराई ना तो गाया उस तरफ (विशश मनुष्यों की तरफ) चला गया। ऐसे बहुत चले जाते हैं अर्थात् हार खा लेते हैं। आगे तुमको पता नहीं था कि यह धन्धा विकार का नहीं करना चाहिए। कोई-कोई अच्छे बच्चे होते हैं, कहते हैं हम ब्रह्मचर्य में रहेंगे। सन्यासियों को देख समझते हैं, पवित्रता अच्छी है। पवित्र और अपवित्र, दुनिया में अपवित्र तो बहुत रहते हैं। पाखाने में जाना भी अपवित्र बनना है इसलिए फौरन स्नान करना चाहिए। अपवित्रता अनेक प्रकार की होती है। किसको दु:ख देता, लड़ना-झगड़ना भी अपवित्र कर्तव्य है।

3] बाप कहते हैं यह 5 विकार तो घड़ी-घड़ी तुमको सतायेंगे। तुम जितना पुरूषार्थ करेंगे बाप को याद करने का, उतना माया तुमको नीचे गिराने की कोशिश करती है। तुम्हारी अवस्था ऐसी मजबूत होनी चाहिए जो कोई माया का तूफान हिला न सके। रावण कोई और चीज नहीं है वा कोई मनुष्य नहीं है। 5 विकारों रूपी रावण को ही माया कहा जाता है।

4] कन्या का मिसाल– जब विकारी बनती तो सबके आगे सिर झुकाती और फिर पुकारती है हे पतित-पावन आओ। अरे, पतित बने ही क्यों जो पुकारना पड़े।

✺ योग-

1] जितना बाप को याद करेंगे उतना सतोप्रधान बनेंगे और आयु बड़ी होगी फिर मृत्यु का डर निकल जायेगा। याद से दु:ख दूर हो जायेंगे। तुम फूल बन जायेंगे। याद में ही गुप्त कमाई है। याद से पाप कट जाते हैं। आत्मा हलकी हो जाती है, आयु बड़ी हो जाती है।

2] जन्म-जन्मान्तर का जो बोझ सिर पर चढ़ा हुआ है, वह योगबल से ही उतरेगा।

3] घूमते फिरते भी बाप की याद में रहो तो तुमको कभी थकावट नहीं होगी। बाप की याद में अशरीरी हो कितना भी चक्र लगाओ, भल यहाँ से नीचे आबूरोड तक चले जाओ तो थी थकावट नहीं होगी। पाप कट जायेंगे। हल्के हो जायेंगे।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– लक्ष्य को सदा सामने रखो तो दैवीगुण आते जायेंगे। अब अपनी सम्भाल करनी है, आसुरी गुणों को निकाल दैवीगुण धारण करने हैं।

2] बड़ी आयु के लिए तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की मेहनत करो।

3] बाप कहते हैं जन्म-जन्मान्तर तो तुमने पाप किया है। वह सब आदतें अब मिटानी है। अभी तुमको सच्चा-सच्चा महान् आत्मा बनना है।

4] आयुश्वान भव, धनवान भव.... तुम्हारी सब कामनायें पूरी करते, वरदान देते हैं। परन्तु **सिर्फ वरदान से कोई काम नहीं होता। मेहनत करनी है। हर एक बात समझने की है।** अपने को राज-तिलक देने के अधिकारी बनना है।

5] सफल करते रहो तो सर्व खजानों से सम्पन्न वरदानी मूर्त बन जायेंगे।

6] परमात्म अवार्ड लेने के लिए व्यर्थ और निगेटिव को अवाइड करो।

✺ सेवा-

1] सतयुग है राम राज्य। सिर्फ त्रेता में राम राज्य कहें तो फिर सूर्यवंशी लक्ष्मी-नारायर का राज्य कहाँ गया? तो यह सब ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिल रहा है। नये-नये भी आते हैं जिनको तुम ज्ञान देते हो। लायक बनाते हो।